अगर ऐसा है तो मै खुद को सांप्रदायिक कहने से नहीं हिचकूंगी, संसद में कह कर सुषमाजी ने सबको हैरान कर दिया था।

पेज 4

RNI : UAHIN/25/A3210

आवाम इंडिया

हिन्दी साप्ताहिक

वर्षः 01 अंकः 16 देहरादून, शुक्रवार 07 अगस्त 2026 मूल्य 2 रुपये पृष्ठः 8 www.aawamindia.com

मुख्यमंत्री ने किया शिवभक्त कांवड़ियों का आत्मीय स्वागत

हरिद्वार। धर्मनगरी हरिद्वार में कांवड़ यात्रा के दौरान आज आस्था, सेवा और संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिला। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में देवभूमि उत्तराखण्ड ने देश के विभिन्न राज्यों से आए शिवभक्त कांवड़ियों का आत्मीय स्वागत और अभिनंदन किया। राज्य सरकार की ओर से आयोजित इस विशेष कार्यक्रम में श्रद्धालुओं के सम्मान के साथ-साथ कांवड़ यात्रा के सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सफल संचालन के लिए किए जा रहे प्रयासों का भी संदेश दिया गया।

इस दौरान हरकी पैड़ी से लेकर कांवड़ यात्रा मार्ग पर हेलीकॉप्टर से शिवभक्तों पर पुष्पवर्षा कर उनका स्वागत किया गया। अलकनंदा होटल परिसर में आयोजित भव्य समारोह में मुख्यमंत्री ने पांच शिवभक्त कांवड़ियों का चरण प्रक्षालन कर उनका सम्मान किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कांवड़ यात्रियों की स्वास्थ्य सहायता एवं सुविधाओं के लिए स्थापित मुख्यमंत्री स्वास्थ्य सेवा शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने शिविर में उपलब्ध चिकित्सकीय सुविधाओं का अवलोकन किया और श्रद्धालुओं को त्वरित उपचार, आवश्यक दवाइयां तथा अन्य स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने की व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

मुख्यमंत्री ने देश के विभिन्न राज्यों से आए शिवभक्त कांवड़ियों के बीच पहुंचकर उनका स्वागत किया और अपने हाथों से भोजन परोसा।

कांवड़ यात्रियों के अभिनंदन कार्यक्रम के अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड सरकार का संकल्प है कि देवभूमि आने वाले प्रत्येक शिवभक्त को सुरक्षित, सुगम और सम्मानजनक वातावरण मिले। कांवड़ यात्रा केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सनातन परंपरा, सामाजिक समरसता और

आध्यात्मिक चेतना का विराट पर्व है। इसके सफल आयोजन के लिए राज्य सरकार सभी संबंधित विभागों के समन्वय से निरंतर कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले पांच वर्षों से उन्हें कांवड़ यात्रा के दौरान शिवभक्तों के बीच आने और उनकी सेवा करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। उन्होंने कहा कि भगवान शिव का नाम करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए आस्था, ऊर्जा और विश्वास का आधार है। कठिन परिस्थितियों में भी शिवभक्त सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा पूरी करते हैं और "बम-बम भोले" के जयघोष के साथ अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। कांवड़ यात्रा अनुशासन, सेवा, समर्पण और सामाजिक एकता का भी प्रतीक है।

उन्होंने बताया कि इस वर्ष अब तक एक करोड़ से अधिक शिवभक्त गंगाजल लेकर सफलतापूर्वक अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश की सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक स्थलों के संरक्षण एवं विकास का व्यापक कार्य हो रहा है। काशी विश्वनाथ धाम, महाकाल लोक, श्रीराम जन्मभूमि, केदारनाथ धाम के पुनर्निर्माण और बद्रीनाथ मास्टर प्लान जैसी परियोजनाएं भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर नई पहचान प्रदान कर रही हैं।

मुख्यमंत्री ने केदारनाथ आपदा का उल्लेख करते हुए कहा कि वर्ष 2013 की आपदा के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में श्री केदारनाथ धाम का पुनर्निर्माण कर इसे भव्य और दिव्य स्वरूप दिया गया है। वहां आस्था पथ, सरस्वती घाट, आदि शंकराचार्य की प्रतिमा, तीर्थ पुरोहित आवास सहित अनेक सुविधाओं का विकास किया गया है। उन्होंने कहा कि हरिद्वार में प्रस्तावित गंगा कॉरिडोर और शारदा कॉरिडोर जैसी योजनाएं राज्य के विकास और धार्मिक पर्यटन को नई दिशा प्रदान करेंगी।मुख्यमंत्री ने कहा कि कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके लिए यात्रा मार्गों पर सीसीटीवी कैमरे, ड्रोन निगरानी, एंबुलेंस सेवाएं, स्वास्थ्य शिविर और आपातकालीन सहायता व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। उन्होंने शिवभक्तों से यात्रा के दौरान अनुशासन, मर्यादा और धार्मिक परंपराओं का पालन करने की अपील की।उन्होंने पुलिस, प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, पर्यावरण मित्रों, स्वच्छता कर्मियों, स्वयंसेवी संस्थाओं और अन्य सेवा कार्यों में जुटे कर्मयोगियों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सभी का सामूहिक सहयोग ही इस विशाल आयोजन को सफल बनाता है।मुख्यमंत्री ने कांवड़ यात्रा के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पांच-पांच पुलिसकर्मियों और पर्यावरण मित्रों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान केवल कुछ व्यक्तियों का नहीं, बल्कि उन सभी कर्मयोगियों के प्रति राज्य की कृतज्ञता का प्रतीक है, जो यात्रा के दौरान सुरक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य व्यवस्थाओं को सुचारु बनाए रखने में दिन-रात जुटे हुए हैं।

इस अवसर पर महामण्डलेश्वर ललितानंद गिरी महाराज, कैबिनेट मंत्री श्री मदन कौशिक, श्री प्रदीप बत्रा एवं श्री राम सिंह कैड़ा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती किरण चौधरी, विधायक रानीपुर श्री आदेश चौहान, हरिद्वार की मेयर श्रीमती किरण जैसल, रुड़की की मेयर श्रीमती अनिता अग्रवाल, पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद, भाजपा जिलाध्यक्ष श्री आशुतोष शर्मा, पूर्व विधायक श्री संजय गुप्ता, दायित्वधारी श्री देशराज कर्णवाल, श्री दिनेश कौशिक, डॉ. जयपाल सिंह चौहान, श्री श्यामवीर सैनी, श्री शोभाराम प्रजापति, श्री नितिन गौतम, शिवालिक नगर पालिका अध्यक्ष श्री राजीव शर्मा, गंगा सभा के महामंत्री श्री तन्मय वशिष्ठ, भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री विक्रम भुल्लर, पूर्व मेयर श्री मनोज गर्ग, गढ़वाल आयुक्त श्री आनंद स्वरूप, मेलाधिकारी श्रीमती सोनिका, आईजी गढ़वाल श्री राजीव स्वरूप, आईजी (कुंभ मेला) श्री योगेन्द्र सिंह रावत, डीएम श्री मयूर दीक्षित, एसएसपी श्री नवनीत सिंह भुल्लर, सीडीओ डॉ. ललित नारायण मिश्र, एसपी (यातायात) श्रीमती निशा यादव, एडीएम श्री जितेंद्र कुमार, एसपी नगर श्री अभय प्रताप सिंह, सचिव एचआरडीए श्री प्रत्यूष सिंह तथा एसडीएम हरिद्वार श्री योगेश मेहरा, उप मेलाधिकारी मनजीत सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि, संत-महात्मा, गणमान्य नागरिक एवं बड़ी संख्या में शिवभक्त कांवड़िये उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अपर मेलाधिकारी श्री दयानंद सरस्वती ने किया।

लम्बे इंतेजार के बाद गोदियाल को मिली टीम

(मौ वसी ज़ैदी)

आखिरकार कांग्रेस हाईकमान ने उत्तराखंड में नई प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा कर दी है। एक लम्बे इंतेजार के बाद प्रदेश कांग्रेस की टीम बनायी गयी है। इस इंतेजार में करण माहरा का पूरा कार्यकाल निकल गया था और अब गणेश गोदियाल को भी आधे वर्ष से ज्यादा का समय गुजर चुका है। एक अदद टीम बनाने के लिए शायद खूब मंथन करना पड़ा है और सभी धड़ो को खुश करने का प्रयास किया गया है। इस नई कार्यकारिणी में 24 उपाध्यक्ष, 36 महासचिव और 107 सचिव बनाये गये हैं। इस कार्यकारिणी में कुछ ऐसे चेहरे है जो करीब 5 कार्यकाल से अपने पद पर कायम हैं उनमें कोई फेरबदल नहीं किया गया है। कुछ ऐसे युवा चेहरे भी हैं जिन्हें पहली बार बड़ी जिम्मेदारी मिली है।

ये चुनावी वर्ष है और कुछ महीनों के बाद पार्टी को मैदान में उतरना है और मुकाबला पहले के मुकाबले ज्यादा कठिन

है। प्रदेश निर्माण के बाद एक बाद एक भाजपा और कांग्रेस को सरकार चलाने का मौका मिलता रहा है। पहली बार 2022 में भाजपा ने अपना कार्यकाल रिपीट किया था और अब 10 वर्ष भाजपा को प्रदेश में सरकार चलाते हुए पूर्ण हो जायेंगे। कांग्रेस को अधिक सजग और आगे रहने की आवश्यकता थी लेकिन कांग्रेस थोड़ी धीमी रफ्तार से आगे बढ़ रही है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि पिछले 4 वर्षों में करण माहरा और अब गणेश गोदियाल ने कई अहम मुद्दों पर भाजपा के खिलाफ एक जबरदस्त माहौल बनाया है। सड़क पर खूब आंदोलन किये। कई मुद्दों पर सरकार असहज भी हुई लेकिन प्रदेश कांग्रेस को अपने हाईकमान का उतना साथ नहीं मिला। देवेंद्र यादव के जाने के बाद कुमारी शैलजा के कार्यकाल में प्रदेश कांग्रेस को ज्यादा तव्वोजह नहीं मिल पायी है। देवेंद्र यादव प्रदेश में कुमारी शैलजा के मुकाबले ज्यादा समय देते थे। यही वजह थी कि उस समय बड़े नेताओं के खूब दौरे लगते थे। अब पिछले 4 वर्षों में एक बार मल्लिकार्जुन खड़गे, दो बार राहुल गांधी और एक बार केसी वेणुगोपाल के दौरे तय किये गये। जिसमें एक राहुल गांधी का दौरा खराब मौसम के कारण रद्द भी करना पड़ा था। कुल मिलाकर करण माहरा के कार्यकाल में बन्नू स्कूल में मल्लिकार्जुन खड़गे और गणेश गोदियाल के कार्यकाल में अब तक राहुल गांधी और केसी वेणुगोपाल ही आये हैं। प्रियंका गांधी या कोई ओर कांग्रेस का बड़ा चेहरा अभी तक उत्तराखंड से दूर है।

इस नई कार्यकारिणी से उत्तराखंड कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को मनोबल जरूर बढ़ेगा लेकिन इतना होना काफी नहीं है। भाजपा संगठन विस्तार में कहीं आगे हैं। वहां दर्जनों अनुवांशिक संगठन बन चुके हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह सहित लगभग सभी बड़े नेताओं के एक नहीं कई दौरे हो चुके हैं। विधायकों की प्रत्येक सीट का मंथन हो चुका है। वहां पन्ना प्रमुख तय है जबकि कांग्रेस मैदान में तो है लेकिन रफ्तार धीमी है। अब समय कम है और मुकाबला कड़ा है। कांग्रेस के लिए ये मुकाबला इसलिए भी कड़ा है क्योंकि पुष्कर सिंह धामी भाजपा हाईकमान के पूर्ण विश्वास के साथ कार्य कर रहे हैं। प्रदेश में सबसे लम्बे समय तक मुख्यमंत्री बने रहने का रिकॉर्ड बना चुके हैं। कम आयु में लम्बा अनुभव हासिल कर चुके हैं। इस मुकाबले में प्रदेश कांग्रेस से ज्यादा हाईकमान को सजग होने की आवश्यकता है। कुमारी शैलजा और उनकी टीम को ज्यादा से ज्यादा समय उत्तराखंड में बिताना होगा। बूथ लेवल तक टीम का निर्माण करना होगा। हार-जीत अलग पहलू है लेकिन मुकाबला ऐसा तो हो कि मुकाबला लगे। कांग्रेस ने 2022 का चुनाव जबरदस्त तरीके से लड़ा था। महज कुछ गलतियां उनपर भारी पड़ी और इतनी भारी पड़ी कि सरकार बनाने का ख्वाब देखते-देखते 19 पर सिमट गयी। अब उन गलतियों से कांग्रेस ने कितना सबक सीखा है ये देखने वाली बात होगी।

राष्ट्रीय कैडेट कोर युवाओं में राष्ट्रीय चरित्र निर्माण करने वाला देश का एक प्रतिष्ठित संगठन : सीएम

देहरादून। राष्ट्रीय कैडेट कोर के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल वीरेन्द्र वत्स, YSM, SM, टैड ने नई दिल्ली स्थित उत्तराखण्ड निवास में मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी से शिष्टाचार भेंट की।

इस अवसर पर उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय कैडेट कोर के विस्तार, सीमांत एवं दुर्गम क्षेत्रों तक राष्ट्रीय कैडेट कोर की प्रभावी पहुंच सुनिश्चित करने तथा संगठन की आधुनिक एवं सुदृढ़ आधारभूत संरचना के विकास से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई।महानिदेशक ने राज्य के अधिकाधिक युवाओं को राष्ट्रीय कैडेट कोर से जोड़ने के उद्देश्य से सीमावर्ती एवं दूरस्थ क्षेत्रों में नई एनसीसी इकाइयों के गठन एवं विस्तार की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने राज्य में आधुनिक प्रशिक्षण अवसंरचना के विकास, प्रशिक्षण सुविध ाओं के सुदृढ़ीकरण तथा प्रस्तावित एनसीसी अकादमी की स्थापना सहित विभिन्न भावी योजनाओं की रूपरेखा से मुख्यमंत्री को अवगत कराया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड सरकार युवाओं के सर्वांगीण विकास, राष्ट्रभक्ति, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता तथा सेवा-भाव को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय कैडेट कोर युवाओं में राष्ट्रीय चरित्र, नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने वाला देश का एक प्रतिष्ठित संगठन है, जिसकी राष्ट्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्यमंत्री ने राज्य में छब्ब के विस्तार तथा प्रस्तावित आधारभूत संरचना विकास से संबंधित सभी पहलों के लिए राज्य सरकार की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन देते हुए कहा कि इन परियोजनाओं के प्रभावी एवं समयबद्ध क्रियान्वयन के लिए हरसंभव सहयोग प्रदान किया जाएगा।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इन प्रयासों से राज्य के युवाओं को व्यक्तित्व विकास, नेतृत्व प्रशिक्षण एवं राष्ट्र सेवा के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे।

सुरक्षा सर्वोपरि, कांवड मेला क्षेत्र में हर कदम पर दून पुलिस की पैनी नजर

देहरादून। कांवड मेला क्षेत्र में हर कदम पर दून पुलिस की पैनी नजर बनी हुई हैं। सुरक्षा के दृष्टिगत त्रिवेणी घाट परिसर, बस अड्डा परिसर, रेलवे स्टेशन, मुख्य बाजार एवं भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर बम डिस्पोजल स्क्वाड देहरादून ने सघन चौकिंग अभियान चलाया। इस अवसर पर पुलिस अधिकारियों ने किसी भी प्रकार की संदिग्ध वस्तु मिलने अथवा किसी व्यक्ति के संदिग्ध प्रतीत होने पर तत्काल इसकी सूचना पुलिस कंट्रोल रूम अथवा निकटतम चौकी को देने हेतु आमजन को जागरूक किया। कांवड मेला को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक देहरादून द्वारा कांवड़ मेला क्षेत्र में सघन चेकिंग अभियान चलाते हुए संदिग्धों की धरपकड एव उनके विरुद्ध प्रभावी वैधानिक कार्यवाही किये जाने हेतु सभी अधीनस्थों को निर्देश निर्गत किये गये हैं। निर्गत निर्देशों के अनुपालन में दून पुलिस द्वारा के बम डिस्पोजल स्क्वॉड ने ऋषिकेश के त्रिवेणी घाट के आरती परिसर, नाव घाट, आस्था पथ एवं बस अड्डा ऋषिकेश परिसर की दुकानो, बसों व ट्रॉजिट कैंप, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों पर सघनता से चेकिंग अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान लोगों के साथ वार्ता करते हुए उन्हें सतर्क रहते हुए किसी भी संदिग्ध वस्तु मिलने पर तत्काल इसकी सूचना निकटतम पुलिस चौकी या पुलिस कंट्रोल रूम को देने हेतु जागरूक किया गया।

हर गाँव तक बेहतर सड़क पहुँचाने पर सरकार का फोकस : भरत सिंह चौधरी

देहरादून। उत्तराखंड सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री भरत सिंह चौधरी की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के अंतर्गत संचालित कार्यों की प्रगति तथा वन स्वीकृतियों की स्थिति की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति, वन स्वीकृतियों की वर्तमान स्थिति तथा कार्यों के समयबद्ध निष्पादन पर विस्तार से चर्चा की गई। काबीना मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी संबंधित निर्माण कार्य निध ीरित समय-सीमा के भीतर उच्च गुणवत्ता के साथ पूर्ण किए जाएँ । उन्होंने यह भी निर्देश दिये कि सड़कों के रखरखाव का कार्य संबंधित ठेकेदारों द्वारा नियमित रूप से किया जाए, ताकि आम जनता को बेहतर एवं सुरक्षित आवागमन की सुविध ा मिल सके, प्रभावित लोगों को देय मुआवजे का वितरण समय पर सुनिश्चित किया जाए, जिससे जनता को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि परियोजनाओं को समय पर पूरा करने के लिए वन स्वीकृतियों की प्रक्रिया में तेजी लाना सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके लिए प्रतिपूरक वनीकरण (कम्पेन्सेटरी अफॉरेस्टेशन) हेतु भूमि की उपलब्धता समय रहते सुनिश्चित की जाए, ताकि किसी प्रकार की अनावश्यक देरी न हो। बैठक में यह भी निर्देश दिए गए कि परियोजना कार्यान्वयन इकाइयाँ (पीआईयू) जिला प्रशासन एवं वन विभाग के अधि कारियों के साथ सतत एवं प्रभावी समन्वय बनाए रखें।

बूथ स्तर पर रोज होगी मॉनिटरिंग, राजनीतिक दलों के साथ जिलाधिकारी ने की समीक्षा बैठक

गौचर / चमोली। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार संचालित विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के प्रभावी, पारदर्शी एवं समयबद्ध क्रियान्वयन के उद्देश्य से गुरुवार को जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी गौरव कुमार की अध्यक्षता में मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में एसआईआर अभियान की प्रगति, दावे एवं आपत्तियों के निस्तारण, नोटिस वितरण तथा निर्वाचन नामावली पुनरीक्षण से संबंधित विभिन्न व्यवस्थाओं की विस्तृत समीक्षा की गई।

बैठक में अपर जिलाधिकारी ने बताया कि जनपद में अब तक 63,347 नोटिसों के सापेक्ष 61,194 नोटिस वितरित किए जा चुके हैं तथा शेष 2,153 नोटिसों का वितरण भी निर्धारित समयावधि में पूर्ण करने की कार्रवाई जारी है। इनमें बद्रीनाथ विधानसभा क्षेत्र के 21,900, थराली के 19,935 तथा कर्णप्रयाग विध ानसभा क्षेत्र के 21,512 नोटिस शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि जनपद की तीनों विधानसभा क्षेत्रों में कुल 2,72,188 मतदाता हैं, जिनमें से 2,61,060 मतदाताओं का सफलतापूर्वक मैपिंग कार्य पूर्ण किया जा चुका है। निर्वाचन कार्यों के सुचारु संचालन के लिए जनपद के 633 मतदेय स्थलों पर 14 सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों एवं 31 अतिरिक्त सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधि कारियों की तैनाती की गई है।

इसके अतिरिक्त 633 बूथ लेवल अधिकारियों के सहयोग के लिए 633 अतिरिक्त कार्मिक भी नामित किये गये हैं, जो दावे एवं आपत्तियों की सुनवाई, अभिलेखों के परीक्षण तथा अन्य निर्वाचन संबंधी कार्यों में सहयोग प्रदान करेंगे।

बैठक में बताया गया कि बद्रीनाथ विधानसभा क्षेत्र में 3 से 28 अगस्त, थराली विधानसभा क्षेत्र में 3 से 31 अगस्त तथा कर्णप्रयाग विधानसभा क्षेत्र में 3 से 22 अगस्त 2026 तक निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दावे एवं आपत्तियों की सुनवाई की जा रही है।

जिलाधिकारी ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को निर्वाचन नामावली पुनरीक्षण प्रक्रिया से जुड़े विभिन्न प्रावधानों की विस्तृत जानकारी देते हुऐ बताया कि जनपद के 633 मतदेय स्थलों के सापेक्ष विभिन्न मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों द्वारा अब तक 1,184 बूथ लेवल एजेंट (बीएलए-2) नियुक्त किए जा चुके हैं।

बैठक में निर्वाचन प्रपत्रों के संबंध में भी विस्तार से जानकारी दी गई। बताया गया कि नये मतदाता पंजीकरण के लिऐ प्रारूप-6 के सापेक्ष प्रारूप-9, नाम विलोपन हेतु प्रारूप-7 के सापेक्ष प्रारूप- 10, जबकि नाम, पता अथवा अन्य संशोधन एवं स्थानांतरण संबंध ी प्रारूप-8 के सापेक्ष प्रारूप-11, 11(क) एवं 11(ख) में संबंधित मतदाता का पूर्ण विवरण उपलब्ध कराया जाता है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया कि प्रारूप-11 नाम एवं पते के संशोधन, प्रारूप- 11(क) एक बूथ से दूसरे बूथ पर स्थानांतरण तथा प्रारूप-11(ख) एक विधानसभा क्षेत्र से दूसरे विधानसभा क्षेत्र में स्थानांतरण से संबंधित विवरण उपलब्ध कराता है।

जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची में शामिल होने से वंचित न रहे। इसके लिए स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ सतत समन्वय बनाए रखा जाए। यदि किसी मतदाता तक पहली बार नोटिस नहीं पहुंच पाता है तो पुनः नोटिस जारी करते हुऐ आवश्यकतानुसार चस्पा की कार्रवाई भी सुनिश्चित की जाए तथा जनप्रतिनिधियों के सहयोग से संबंधि त जानकारी प्राप्त कर नियमानुसार कार्रवाई की जाए।

उन्होंने सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से बूथ स्तर पर प्रतिदिन मॉनिटरिंग करने का आग्रह किया तथा अधिकारियों को निर्देश दिये कि एसआईआर अभियान की दैनिक प्रगति रिपोर्ट राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ नियमित रूप से साझा की जाए, जिससे पुनरीक्षण प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी एवं विश्वासपूर्ण ढंग से संपादित हो सके।बैठक में अपर जिलाधिकारी विवेक प्रकाश, उपजिलाधिकारी राज कुमार पांडे, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी धीरेन्द्र सती, भारतीय जनता पार्टी से विनोद कुमार नेगी,विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि एवं निर्वाचन विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री के दिशा-निर्देशों में पीएम आवास योजना की प्रगति की हुई समीक्षा

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के दिशा-निर्देशों के क्रम में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के तहत राज्य में निर्माणाधीन आवासीय परियोजनाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा के लिए बुधवार को सचिवालय में उच्चस्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सचिव आवास डॉ. आर. राजेश कुमार ने की। इसमें विभिन्न कार्यदायी संस्थाओं, विकासकों, आवास विभाग तथा संबंधित अधिकारियों ने योजनाओं की वर्तमान स्थिति, निर्माण की प्रगति और लंबित कार्यों की जानकारी प्रस्तुत की। बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत संचालित सभी परियोजनाओं की बिंदुवार समीक्षा की गई। सचिव आवास ने कहा कि यह योजना केवल भवन निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमंद परिवारों के अपने घर के सपने को साकार करने का माध्यम है। इसलिए प्रत्येक परियोजना को निर्धारित समयसीमा के भीतर पूरा करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। उन्होंने सभी कार्यदायी संस्थाओं और विकासकों को स्पष्ट निर्देश दिए कि 30 सितंबर 2026 तक सभी लंबित आवासीय परियोजनाओं का निर्माण हर हाल में पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि किसी भी स्तर पर अनावश्यक देरी, लापरवाही या गुणवत्ता से समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। सभी एजेंसियां निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप कार्य करें और निर्माण कार्यों में गुणवत्ता, पारदर्शिता तथा तकनीकी मानकों का पूर्ण पालन सुनिश्चित करें।

समीक्षा बैठक में बताया गया कि प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के तहत राज्य में अब तक 6,464 आवासों का निर्माण कार्य पूर्ण किया जा चुका है। इन आवासों के कब्जा हस्तांतरण की प्रक्रिया भी तेजी से आगे बढ़ाई जा रही है, ताकि पात्र लाभार्थियों को जल्द से जल्द अपने पक्के घरों की सौगात मिल सके। विभाग का लक्ष्य है कि सभी पूर्ण हो चुके आवासों का आवंटन और हस्तांतरण निर्धारित समय के भीतर संपन्न कराया जाए।

बैठक में लंबित परियोजनाओं की प्रगति पर विशेष चर्चा की गई। सचिव आवास ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन परियोजनाओं में कार्य अपेक्षित गति से नहीं चल रहा है, वहां निर्माण में तेजी लाई जाए और नियमित रूप से स्थलीय निरीक्षण कर प्रगति की निगरानी की जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक परियोजना की साप्ताहिक समीक्षा की जाएगी तथा जहां भी किसी प्रकार की बाधा सामने आएगी, उसका तत्काल समाधान किया जाएगा ताकि परियोजनाएं समय पर पूरी हो सकें। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि लाभार्थियों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए निर्माण की गुणवत्ता, आधारभूत सुविधाओं और पारदर्शिता पर विशेष ध्यान दिया जाए। सरकार का उद्देश्य केवल मकान बनाना नहीं, बल्कि लोगों को सुरक्षित, सुविधाजनक और सम्मानजनक आवास उपलब्ध कराना है।

सचिव आवास डॉ. आर. राजेश कुमार ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) को पूरी गंभीरता और प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा, ष्हमारा लक्ष्य केवल निर्धारित संख्या में आवासों का निर्माण करना नहीं, बल्कि प्रत्येक पात्र परिवार को समय पर गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित आवास उपलब्ध कराना है। सभी कार्यदायी संस्थाओं एवं विकासकों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि 30 सितंबर तक लंबित परियोजनाओं को हर हाल में पूरा करें। विभाग प्रत्येक परियोजना की नियमित मॉनिटरिंग करेगा और किसी भी प्रकार की देरी या गुणवत्ता में कमी को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हमारा प्रयास है कि पात्र लाभार्थियों को शीघ्र उनके सपनों का अपना घर मिले और केंद्र एवं राज्य सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।ष

बैठक में संयुक्त मुख्य प्रशासक दिनेश प्रताप सिंह, उप सचिव आवास रजनीश जैन, अधिशासी अभियंता विनोद कुमार चौहान, सहायक अभियंता आकाश चौहान, आवास विशेषज्ञ रोहित रंजन, विभिन्न कार्यदायी संस्थाओं एवं विकासकों के प्रतिनिधि तथा एचआरडीए और डीएलडीए के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में सभी अधिकारियों ने निर्धारित समयसीमा के भीतर कार्य पूर्ण करने और योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए समन्वित रूप से कार्य करने का भरोसा दिलाया।

प्रदर्शनी सौहार्द और सचित्र संविधान दर्शन का आयोजन

देहरादून। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, कला दर्शन विभाग, संस्कार भारती उत्तराखंड और ग्राफिक एरा हिल विश्वविद्यालय के सहयोग से प्रदर्शनी सौहार्द और सचित्र संविधान दर्शन का आयोजन ग्राफिक एरा हिल विश्वविद्यालय में 5 से 7 अगस्त तक ग्राफिक एरा हिल विश्वविद्यालय, देहरादून कैंपस में किया गया है। प्रदर्शनी का उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पद्म श्री श्रीमती माधुरी बड़थ्वाल, सुप्रसिद्ध लोक गायिका एवं संगीतकार, प्रोफेसर डॉ तबस्सुम नकवी, कुलपति, ग्राफिक हिल विश्वविद्यालय, श्रीमती सविता कपूर, अध्यक्ष संस्कार भारती उत्तराखंड एवं विधायक उत्तराखंड सरकार, प्रो डॉक्टर ऋचा काम्बोज, प्रदर्शनी की संयोजिका एवं विभागाध्यक्ष, कला दर्शन विभाग, आईजीएनए, गिरीश चंद शर्मा प्रांत कार्यकारी अध्यक्ष, संस्कार भर्ती उत्तराखंड, डॉ आनंद करमाकर, कुलदीप विनायक, महामंत्री, संस्कार भारती महानगर इकाई, रोशन लाल अग्रवाल उपस्थित। भारत वसुधैव कुटुंबकम में विश्वास रखता है और सौहार्द प्रदर्शनी प्रभावशाली ढंग से यह संदेश देती है कि किस तरह से सद्भाव भारतीय समाज में अति प्राचीन काल से विद्यमान रहा है।

सचित्र संविधान दर्शन प्रदर्शनी भारत की समृद्ध और विविधता से पूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत को परिलिक्षित करती है।

इस प्रदर्शिनी के माध्यम से हमें उन कलाकारों का पता चलता है जिनके बनाए चित्र संविधान में है इन कलाकारों में नंदलाल बोस व अन्य कलाकारों के चित्र हैं जिनमें कुछ महिला कलाकार भी हैं।

सम्पादकीय

बांकीपुर का चुनाव क्यों हारी भाजपा

राजनीति में कुछ हारें केवल हार नहीं होतीं। वे संकेत होती हैं उस समस्या का जिसे अक्सर आता देखकर आँखें बंद कर ली जाती हैं। बांकीपुर का चुनाव परिणाम भारतीय जनता पार्टी के लिए ऐसी ही दस्तक है। बांकीपुर लंबे समय से भाजपा का मजबूत राजनीतिक आधार माना जाता रहा है। ऐसे क्षेत्र में पार्टी की हार इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि सवाल केवल एक सीट हारने का नहीं है। सवाल यह है कि वर्षों से मजबूत संगठन, स्थापित राजनीतिक पहचान, राष्ट्रीय अध्यक्ष की सीट और लगातार जीत के बावजूद मतदाताओं के एक हिस्से ने इस बार बदलाव को क्यों चुना?

प्रशांत किशोर की जीत को केवल भाजपा विरोधी वोटों का परिणाम नहीं है बल्कि ये बताया गया है कि आज का मतदाता राजनीतिक दलों से सिर्फ पहचान नहीं, प्रदर्शन और विकल्प भी मांग रहा है।लंबे समय तक किसी सीट पर जीत किसी भी राजनीतिक दल के लिए आत्मविश्वास पैदा करती है। लेकिन चुनावी राजनीति का सबसे बड़ा नियम हैख्रकोई सीट स्थायी नहीं होती। जब कोई पार्टी लगातार जीतती है, तो उसके कार्यकर्ताओं के बीच यह धारणा बनने लगती है कि संगठन इतना मजबूत है कि परिणाम लगभग तय है। यहीं से जमीन पर छोटी-छोटी नाराजगियां दिखाई देना बंद हो सकती हैं। बांकीपुर में भाजपा के सामने शायद यही चुनौती रही। दूसरी ओर भाजपा के सामने प्रशांत किशोर थे।

प्रशांत किशोर की राजनीतिक पहचान पारंपरिक नेता की नहीं रही है। उन्होंने वर्षों तक अलग-अलग चुनावी अभियानों की रणनीति बनाई और फिर स्वयं राजनीति में उतरकर एक अलग राजनीतिक प्रयोग शुरू किया। इसलिए जब उन्होंने बांकीपुर से चुनाव लड़ने का फैसला किया, तो उन्होंने खुद को केवल एक उम्मीदवार के रूप में नहीं पेश किया।उन्होंने अपने चुनाव को एक सवाल बना दिया कि क्या बिहार में राजनीति का नया विकल्प पैदा हो सकता है? यही सवाल उनके अभियान की सबसे बड़ी राजनीतिक पूंजी बन गया। हालाकि उनकी पार्टी कि विधानसभा में जो हार हुई थी उसे देखते हुए यह महज उनकी एक नैतिक जीत है।

इस हार का एक कारण ये भी है कि आज के मतदाता की राजनीतिक सोच पिछले कुछ वर्षों में काफी बदली है। वह राष्ट्रीय मुद्दों से प्रभावित होता है, लेकिन उसका रोजमर्रा का जीवन भी उसके मतदान निर्णय का हिस्सा है। सड़क कैसी है? शिक्षा की स्थिति क्या है? नौकरी के अवसर कहां हैं सरकारी सेवाएं कितनी प्रभावी हैं? प्रशांत किशोर ने इन व्यवस्था से जुड़े सवालों को अपने राजनीतिक संदेश का हिस्सा बनाया। जब मतदाता किसी स्थापित राजनीतिक व्यवस्था से पूरी तरह नाराज नहीं होता, लेकिन उसमें बदलाव की इच्छा रखता है तब ये मुद्दे बहुत प्रभावी हो जाते हैं। अगर चुनाव की बहस विकास बनाम विकास पर होती, तो भाजपा के पास अपने शासन और संगठन का लंबा रिकॉर्ड था। लेकिन जब बहस नई राजनीति बनाम स्थापित राजनीति की ओर चली गई, तो प्रशांत किशोर को स्वाभाविक बढ़त मिल गई।

बांकीपुर का परिणाम इसी लोकतांत्रिक मनोविज्ञान की ओर संकेत करता है। भाजपा को इसे नाराजगी की तरह नहीं, चेतावनी की तरह देखना चाहिए। क्योंकि चेतावनी समय रहते समझ ली जाए तो हार को भविष्य की जीत में बदला जा सकता है। एक उपचुनाव पूरे राज्य की राजनीतिक दिशा तय नहीं करता। स्थानीय उम्मीदवार, स्थानीय समीकरण, चुनाव का समय, मतदाताओं की प्राथमिकताएं और मुकाबले की प्रकृतिख्रइन सभी का परिणाम पर प्रभाव होता है लेकिन भाजपा के लिए यह परिणाम इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हार एक ऐसे क्षेत्र में हुई है जिसे पार्टी लंबे समय से अपना मजबूत आधार मानती रही है और राष्ट्रीय अध्यक्ष की खघली की हुई सीट है। यानी यह सामान्य हार नहीं, समीक्षा योग्य हार है। अब देखना होगा की चुनाव जीत ने की एक्सपर्ट भाजपा इस हार से कैसे आगे बढ़ती है।

'अगर ऐसा है तो मैं खुद को सांप्रदायिक कहने से नहीं हिचकूंगी', संसद में ऐसा कह कर सुषमाजी ने सबको हैरान कर दिया था

आज जब पूरा देश पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है, तब हर भारतीय के मन में उनकी मुस्कुराती

छवि, ओजस्वी आवाज और मानवीय संवेदनाओं से भरा व्यक्तित्व एक बार फिर जीवंत हो उठता है। देखा जाये तो भारतीय राजनीति में ऐसे नेता विरले ही हुए हैं, जिनकी लोकप्रियता केवल अपनी पार्टी तक सीमित न रहकर राजनीतिक सीमाओं को भी पार कर गई हो। सुषमा स्वराज उन्हीं असाधारण नेताओं में थीं। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, संसद हो या अंतरराष्ट्रीय मंच, उनके शब्दों में दृढ़ता थी, विचारों में स्पष्टता थी और व्यवहार में ऐसी आत्मीयता थी, जिसने उन्हें हर दल के नेताओं और करोड़ों भारतीयों का सम्मान दिलाया। छह अगस्त 2019 को 67 वर्ष की आयु में उनके निधन ने भारतीय राजनीति को एक ऐसी आवाज से वंचित कर दिया, जिसकी कमी आज भी महसूस की जाती है।

सुषमा स्वराज का अंतिम सार्वजनिक संदेश भी उनके राजनीतिक जीवन की सबसे बड़ी वैचारिक प्रतिबद्धताओं में से एक का प्रतीक बन गया। छह अगस्त 2019 की शाम 7:23 बजे उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को टैग करते हुए ट्वीट लिखा था, ष्धन्यवाद प्रधानमंत्री जी। मैं अपने जीवनकाल में इस दिन को देखने की प्रतीक्षा कर रही थी।ष यह संदेश जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने के ऐतिहासिक निर्णय पर उनकी प्रतिक्रिया थी। भारतीय जनता पार्टी वर्षों से जिस संकल्प को लेकर आगे बढ़ रही थी, उसे पूरा होते देखना उनके जीवन की सबसे बड़ी राजनीतिक इच्छाओं में शामिल था। विडंबना देखिए कि इस ऐतिहासिक क्षण पर खुशी व्यक्त करने के कुछ ही घंटों बाद उन्हें हृदयाघात हुआ और उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया। यह संयोग उनके जीवन को एक भावनात्मक पूर्णविराम देता है।

हरियाणा के एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी सुषमा स्वराज ने ऐसे दौर में राजनीति में अपनी पहचान बनाई, जब यह क्षेत्र लगभग पूरी तरह पुरुषों के वर्चस्व वाला माना जाता था। हरियाणा में मात्र 25 वर्ष की आयु में वह भारत की सबसे युवा कैबिनेट मंत्री बनीं और 27 वर्ष की उम्र में राज्य में जनता पार्टी की प्रदेश अध्यक्ष का दायित्व संभाला। बाद के वर्षों में वह लोकसभा सांसद, राज्यसभा सांसद और दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं, लोकसभा में विपक्ष की दूसरी महिला नेता रहीं और भारत की पहली पूर्णकालिक महिला विदेश मंत्री बनने का गौरव भी हासिल किया। उनका राजनीतिक सफर केवल पदों की सूची नहीं था, बल्कि उन तमाम सामाजिक और राजनीतिक बाधाओं को तोड़ने की कहानी था, जिन्हें लंबे समय तक महिलाओं के सामने अजेय माना जाता रहा।

सुषमा स्वराज की सबसे बड़ी पहचान उनकी अद्‌भुत वक्तृत्व कला थी। संसद में उनके भाषण केवल राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप नहीं होते थे, बल्कि उनमें इतिहास, संस्कृति, तर्क और संवेदना का अनूठा संगम दिखाई देता था। वर्ष 1996 में लोकसभा में दिया गया उनका ष्धर्मनिरपेक्षताष पर भाषण आज भी भारतीय संसदीय इतिहास के सबसे चर्चित भाषणों में गिना जाता है। उन्होंने पूरे आत्मविश्वास से कहा था कि यदि वंदे मातरम् का सम्मान करना, राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा की रक्षा करना, अनुच्छेद 370 को समाप्त करने की मांग करना और समान नागरिक संहिता की वकालत करना सांप्रदायिकता है, तो वे स्वयं को सांप्रदायिक कहने से नहीं हिचकेंगी। लेकिन इसी भाषण में उन्होंने धर्मनिरपेक्षता की अपनी परिभाषा भी दी कि एक अच्छा हिंदू, अच्छा मुसलमान, अच्छा सिख और अच्छा ईसाई वही है, जो अपने धर्म का पालन करते हुए दूसरे धर्मों का भी समान सम्मान करे। उनके इस दृष्टिकोण ने वैचारिक बहस को नई दिशा दी और विरोधी दलों के कई नेताओं ने भी उनकी तार्किक क्षमता की सराहना की।

भारतीय संस्कृति की उनकी व्याख्या भी उतनी ही प्रभावशाली थी। जब संसद में भारतीयता की अवधारणा पर प्रश्न उठे, तब उन्होंने भांगड़ा से भरतनाट्यम तक, राजमा-चावल से इडली-दोसा तक और अमरनाथ से रामेश्वरम तक की सांस्कृतिक यात्रा का उल्लेख करते हुए बताया कि विविधताओं के बीच यही एकता भारत की असली पहचान है। उन्होंने कहा कि यही वह संस्कृति है, जिसमें कश्मीर का श्रद्धालु अमरनाथ का जल लेकर रामेश्वरम में भगवान शिव का अभिषेक करता है। उनके इन शब्दों ने भारतीय सांस्कृतिक एकता की ऐसी तस्वीर प्रस्तुत की, जिसे आज भी याद किया जाता है।

हालांकि सुषमा स्वराज की सबसे अलग पहचान विदेश मंत्री के रूप में बनी। वर्ष 2014 में जब उन्होंने विदेश मंत्रालय की जिम्मेदारी संभाली, तब कई लोगों को लगा कि विदेश नीति का पूरा केंद्र प्रधानमंत्री कार्यालय ही रहेगा। लेकिन उन्होंने अपने काम और संवेदनशीलता से यह धारणा बदल दी। उन्होंने विदेश मंत्रालय को आम भारतीय के जीवन से जोड़ दिया। सोशल मीडिया मंच ट्विटर को उन्होंने केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संकट में फंसे भारतीयों के लिए जीवनरेखा बना दिया। दुनिया के किसी भी कोने में कोई भारतीय मुश्किल में होता, तो लोग सीधे उन्हें टैग करते और कुछ ही समय में उनकी ओर से प्रतिक्रिया आ जाती। चाहे जर्मनी के शरणार्थी शिविर में फंसी गुरप्रीत कौर हों, पाकिस्तान में जबरन विवाह का शिकार बनी उज्मा हों, मूक-बधिर गीता की स्वदेश वापसी हो या पाकिस्तान में फंसे हमीद अंसारी का मामला, हर जगह सुषमा स्वराज ने मानवीय संवेदनाओं के साथ हस्तक्षेप किया।

उनकी कार्यशैली इतनी सक्रिय थी कि उन्होंने स्वयं कहा था, ष्मैं न सोती हूँ और न ही भारतीय दूतावासों के अधिकारियों को सोने देती हूँ।ष उनके एक संदेश पर दुनिया के किसी भी देश में भारतीय दूतावास तत्काल सक्रिय हो जाता था। यही कारण था कि भारतीय राजनयिक अपने मोबाइल फोन हर समय चालू रखते थे। विदेश मंत्रालय को उन्होंने पहली बार ऐसा मानवीय चेहरा दिया, जहां फाइलों से पहले इंसान की पीड़ा को महत्व मिला। उनकी हाजिरजवाबी भी लोगों को बेहद पसंद थी। एक बार किसी व्यक्ति ने ट्विटर पर खराब रेफ्रिजरेटर की शिकायत कर दी, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, ष्भाई, मैं रेफ्रिजरेटर के मामले में आपकी मदद नहीं कर सकती। मैं इस समय संकट में फंसे इंसानों की मदद में बहुत व्यस्त हूँ।

विदेश नीति के स्तर पर भी उनके कार्यकाल में भारत ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कीं। कुलभूषण जाधव मामले में अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में भारत की कानूनी सफलता, डोकलाम विवाद के दौरान संतुलित कूटनीति, मालदीव संकट और नेपाल से जुड़े चुनौतीपूर्ण हालात का प्रबंधन, इस्लामिक सहयोग संगठन (व्ब्) की बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व तथा पाकिस्तान के विरोध के बावजूद वहां भारत की प्रभावशाली उपस्थिति, ये सभी उपलब्धियां उनके नेतृत्व की गवाही देती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रमुख विदेश यात्राओं की पृष्ठभूमि तैयार करने में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन से लेकर चीन और किर्गिस्तान तक, उन्होंने परदे के पीछे रहकर भारतीय कूटनीति को मजबूती प्रदान की।देखा जाये तो सुषमा स्वराज को केवल एक सफल राजनेता या कुशल प्रशासक के रूप में याद करना उनके व्यक्तित्व के साथ न्याय नहीं होगा। वह ऐसी जननेता थीं, जिन्होंने राजनीति को मानवीय संवेदना से जोड़ा। उनकी वाणी में ओज था, विचारों में स्पष्टता थी, निर्णयों में राष्ट्रहित सर्वोपरि था और व्यवहार में ऐसी आत्मीयता थी कि राजनीतिक विरोधी भी उनका सम्मान करते थे। शायद यही कारण था कि अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने भी उन्हें भारत की सबसे लोकप्रिय नेताओं में शुमार किया। आज उनकी पुण्यतिथि पर देश उन्हें केवल एक पूर्व विदेश मंत्री के रूप में नहीं, बल्कि उस जननेता के रूप में याद कर रहा है, जिसने राजनीति को सेवा का माध्यम बनाया और करोड़ों भारतीयों के दिलों में हमेशा के लिए अपनी जगह बना ली।

वैश्विक संस्कृत अनुसंधान में भारत-नेपाल पहल का उत्तराखंड ने किया नेतृत्व

देहरादून। प्रदेश के संस्कृत शिक्षा सचिव श्री दीपक कुमार ने नई दिल्ली स्थित नेपाल दूतावास में नेपाल के कार्यवाहक राजदूत महामहिम डॉ. सुरेन्द्र थापा से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान संस्कृत के बढ़ते वैश्विक महत्व को रेखांकित करते हुए भारत और नेपाल के मध्य गहन शैक्षणिक सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया गया, ताकि संस्कृत के क्षेत्र में अनुसंधान, विद्वत्ता तथा शैक्षिक अवसरों को नई गति प्रदान की जा सके। सचिव, संस्कृत शिक्षा ने बताया कि इस दौरान नेपाल के कार्यवाहक राजदूत महामहिम डॉ. सुरेन्द्र थापा ने संस्कृत के संवर्धन हेतु किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए नेपाल की संस्कृत विद्वत्ता और साहित्यिक परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि दोनों

देशों के मध्य शैक्षणिक सहयोग शिक्षण पद्धतियों के आदान-प्रदान तथा भारतीय संस्कृत विद्वानों के सतत मार्गदर्शन से नेपाल में संस्कृत शिक्षा एवं अनुसंधान को नई गति मिलेगी तथा इसे वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। भेंट के दौरान सचिव श्री दीपक कुमार ने नेपाल के राजदूत को अवगत कराया कि उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेनि) गुरमीत सिंह सदैव इस बात पर विश्वास रखते हैं कि संस्कृत सीखना अत्यंत सरल है। उन्होंने युवाओं के बीच संस्कृत एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के समन्वय के महत्व पर भी विशेष बल दिया है, जिससे संस्कृत के शुद्ध उच्चारण को सभी के लिए सहज बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि उत्तराखंड संस्कृत को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाने में अग्रणी भूमिका निभाए। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी, संस्कृत साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति सदैव समर्पित रहे हैं। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में राज्य के सभी 13 जनपदों में 13 संस्कृत ग्रामों की स्थापना की गई है। 28 अगस्त 2026 को संस्कृत दिवस के अवसर पर संस्कृत ग्राम, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, उत्तराखंड संस्कृत संस्थानम् तथा राज्यभर के विभिन्न गुरुकुल संगोष्ठियों, व्याख्यानों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं जन-जागरूकता अभियानों के माध्यम से आधुनिक समाज में संस्कृत की शाश्वत प्रासंगिकता का व्यापक प्रचार-प्रसार करेंगे। नेपाल द्वारा जून 2025 में आयोजित 19 वें विश्व संस्कृत सम्मेलन में विश्व भर के प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वानों, शिक्षाविदों, शोध कर्ताओं एवं संस्कृत प्रेमियों ने सहभागिता की। इस सम्मेलन ने, संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को नई दिशा और नई ऊर्जा प्रदान की। श्री दीपक कुमार ने कहा कि उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय एवं नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के मध्य होने वाला समझौता ज्ञापन शैक्षणिक आदान-प्रदान, संयुक्त अनुसंधान, शिक्षक एवं छात्र सहयोग तथा संस्कृत अध्ययन के संवर्धन के लिए नए अवसर प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि भारत और नेपाल का संबंध संस्कृत, सनातन परंपराओं, दर्शन, साहित्य तथा समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर आधारित एक अद्वितीय सभ्यतागत संबंध है। सदियों से संस्कृत दोनों देशों के लोगों को एक साझा बौद्धिक एवं आध्यात्मिक आधार प्रदान करती रही है। इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज के संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य एवं वरिष्ठ संस्कृत पत्रकार डॉ. सुनील जोशी भी उपस्थित रहे। बैठक में दोनों देशों के युवा शोधार्थियों एवं विद्वानों को संयुक्त शोध परियोजनाओं, शैक्षणिक आदान-प्रदान तथा संयुक्त प्रकाशनों के लिए प्रोत्साहित करने पर भी विस्तार से चर्चा हुई. जिससे भारत-नेपाल के सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके।

आईआईटी कानपुर और समग्र शिक्षा उत्तराखंड ने देशभर के 15,000 से अधिक विद्यार्थियों के साथ मनाया अंतरराष्ट्रीय चंद्र दिवस 2026

हल्द्वानी। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (आईआईटी कानपुर) ने समग्र शिक्षा उत्तराखंड के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय चंद्र दिवस 2026 समारोह के तहत एक और विशेष ऑनलाइन आउटरीच सत्र आयोजित किया। इस कार्यक्रम में 15,000 से अधिक छात्र और 500 शिक्षक शामिल हुए, जिन्हें चंद्र विज्ञान, भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम और भविष्य के अंतरिक्ष अन्वेषण के बारे में रोचक जानकारी मिली। 1969 में मानवता के पहले चंद्रमा लैंडिंग की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित इस सत्र ने युवा शिक्षार्थियों को अंतरिक्ष अन्वेषण के भविष्य को आकार देने वाली वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को जानने-समझने के लिए प्रोत्साहित किया।

यह सत्र श्री शंकर राम एन आर द्वारा संचालित किया गया, जो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), नई दिल्ली के क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (आरआरएससी) उत्तर में वैज्ञानिक हैं। सुदूर संवेदन और भू-स्थानिक तकनीकों में अपनी विशेषज्ञता के आधार पर, उन्होंने डॉ. विक्रम साराभाई की परिकल्पना से लेकर चंद्रयान मिशनों तक भारत की अंतरिक्ष यात्रा का विवरण दिया, जिसमें चंद्रयान-1 के माध्यम से चंद्रमा पर जल अणुओं की खोज, चंद्रयान-2 से मिली सीखें, और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट चंद्रयान-3 की सफल सॉफ्ट लैंडिंग जैसे महत्वपूर्ण पड़ाव शामिल थे। उन्होंने भारत के आगामी मिशनों, जिनमें चंद्रयान-4, गगनयान मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम, प्रस्तावित भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन, और किसी भारतीय अंतरिक्ष यात्री को चंद्रमा पर भेजने की देश की दीर्घकालिक परिकल्पना शामिल है, के बारे में भी जानकारी साझा की।

यह सत्र आईआईटी कानपुर के विस्तृत होते एसटीईएम आउटरीच तंत्र के माध्यम से आयोजित किया गया, जिसने उत्तराखंड भर के 160 अटल टिंकरिंग लैब्स (एटीएल) और 13 एस्ट्रोफिजिक्स लैब्स, जम्मू-कश्मीर की एस्ट्रोफिजिक्स लैब्स, अरुणाचल प्रदेश के अटल टिंकरिंग लैब्स, पढ़ाई-लिखाई (एआई) लैब्स, और 15 राज्यों के श्साथीश केंद्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को जोड़ा। इस तकनीक-सक्षम मंच ने शहरी, ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों के छात्रों को एक साथ भाग लेने में सक्षम बनाया, जिससे विशेषज्ञों के साथ संवाद की पहुंच बढ़ी और देशभर में एसटीईएम आउटरीच को मजबूती मिली।

सत्र के दौरान, छात्रों ने चंद्रमा की उत्पत्ति, भौतिक विशेषताओं, और पृथ्वी व ब्रह्मांड को समझने में इसके महत्व के बारे में जाना। वक्ता ने अपोलो मिशनों, नासा के आर्टेमिस कार्यक्रम, और स्वायत्त चंद्र लैंडिंग, रोवर नेविगेशन तथा भविष्य के अंतरिक्ष अन्वेषण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता व रोबोटिक्स की बढ़ती भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

"अंतरराष्ट्रीय चंद्र दिवस सत्र हमारे छात्रों के लिए बेहद जानकारीपूर्ण और रोचक रहा। इसने भारत के चंद्र मिशनों, चंद्र अन्वेषण के पीछे के विज्ञान, और भविष्य के अंतरिक्ष अनुसंधान व नवाचार के बारे में मूल्यवान जानकारी दी। ऐसे विशेषज्ञ-नेतृत्व वाले सत्र हमारी एस्ट्रोफिजिक्स लैब और अटल टिंकरिंग लैब में हो रहे व्यावहारिक शिक्षण को पूरक बनाते हैं, जहां छात्रों को अपने विचारों को व्यावहारिक नवाचारों में बदलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। समग्र शिक्षा और आईआईटी कानपुर के सहयोग से क्रियान्वित ऐसी पहलें वैज्ञानिक जिज्ञासा को पोषित करने और एसटीईएम शिक्षा में छात्रों की रुचि को मजबूत करने में मदद कर रही हैं।"

ख्र सुरेंद्र कुमार बिंद, व्याख्याता (रसायन विज्ञान), राजकीय इंटर कॉलेज, चम्बा, टिहरी गढ़वालयह सत्र बेहद जानकारीपूर्ण और प्रेरणादायक था। इससे हमें भारत के चंद्रयान मिशनों, चंद्रयान-4 जैसे आगामी कार्यक्रमों, और चंद्र अन्वेषण के पीछे के विज्ञान की गहरी समझ मिली। एक इसरो वैज्ञानिक से बातचीत करने से सीखने का अनुभव और भी रोचक हो गया। मुझे उम्मीद है कि हमें ऐसे सत्रों में नियमित रूप से भाग लेने का अवसर मिलेगा, क्योंकि ये हम जैसे छात्रों को विज्ञान और अंतरिक्ष तकनीक के बारे में और अधिक जानने के लिए प्रेरित करते हैं।

ख्र दिव्यांश, छात्र, केंद्रीय विद्यालय, साथी केंद्र, खेतड़ी नगर, राजस्थान

उत्तराखण्ड ने वैश्विक स्तर पर संस्कृत के प्रसार को दिया नया आयाम

देहरादून। सचिव, संस्कृत शिक्षा, दीपक कुमार ने नई दिल्ली में इंडोनेशिया गणराज्य के दूतावास में कार्यवाहक राजदूत युधो सासोंगको से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान संस्कृत तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के वैश्विक प्रसार हेतु उत्तराखण्ड और इंडोनेशिया के मध्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक सहयोग को सुदृढ़ करने पर विस्तार से चर्चा की गई। उन्होंने उत्तराखण्ड सरकार द्वारा संस्कृत को अपनी द्वितीय राजभाषा का दर्जा प्रदान करने, संस्कृत के संवर्धन एवं प्रचार के लिए किए जा रहे अभिनव प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी स्वयं देववाणी संस्कृत को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के मार्गदर्शन में विश्व की सबसे प्राचीन एवं प्रभावशाली भाषा संस्कृत अब भारत की सीमाओं से आगे बढ़कर वैश्विक शिक्षाविदों के बीच अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी प्रतिष्ठा निरंतर बढ़ रही है। राज्य के प्रत्येक जनपद में एक-एक संस्कृत ग्राम की स्थापना की गई है। मात्र एक वर्ष की अल्प अवधि में इन संस्कृत ग्रामों ने, स्थानीय समुदायों में संस्कृत सीखने तथा भारत की दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत विरासत से पुनः जुड़ने में उल्लेखनीय पहल की है। सचिव, संस्कृत शिक्षा, श्री दीपक कुमार ने बताया कि राज्य में संस्कृत आयोग के गठन की कार्यवाही शुरू कर दी गई है। इस संबंध में देशभर से सुझाव आमंत्रित किए गए हैं, जिन्हें विश्व संस्कृत दिवस से पूर्व 10 अगस्त तक उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय को प्रेषित किये जाने की योजना है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इंडोनेशिया के शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के साथ सहयोग स्थापित होने से संस्कृत एवं भारतीय ज्ञान परम्परा का व्यापक प्रसार होगा तथा दोनों देशों के युवा अपनी साझा सांस्कृतिक विरासत, नैतिक मूल्यों और प्राचीन सभ्यतागत संबंधों को और अधिक गहराई से समझ सकेंगे। उन्होंने बताया कि इंडोनेशियाई भाषा में संस्कृत मूल के अनेक शब्द आज भी प्रचलित हैं, जो दोनों देशों के बीच सदियों पुराने सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत संबंधों का सशक्त प्रमाण हैं। विगत माह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की इंडोनेशिया यात्रा के दौरान इंडोनेशिया के राष्ट्रपति श्री प्रबोवो सुबियांतो ने उल्लेख किया था कि इंडोनेशियाई भाषा का लगभग 50 प्रतिशत भाग संस्कृत से प्रभावित है। यह तथ्य भारत और इंडोनेशिया के बीच विद्यमान गहरे सांस्कृतिक संबंधों का सशक्त प्रतीक है। सचिव श्री दीपक कुमार ने प्रस्ताव रखा कि इंडोनेशिया गणराज्य के दूतावास के सहयोग से हरिद्वार स्थित उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय एवं उत्तराखण्ड संस्कृत संस्थानम, इंडोनेशिया के विश्वविद्यालयों एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों के साथ संस्कृत, भारतीय ज्ञान प्रणाली तथा सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में सहयोग हेतु समझौता ज्ञापन संपादित कर सकता है।

हर गाँव तक बेहतर सड़क पहुँचाने पर सरकार का फोकस : भरत सिंह चौधरी

देहरादून। उत्तराखंड सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री भरत सिंह चौधरी की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के अंतर्गत संचालित कार्यों की प्रगति तथा वन स्वीकृतियों की स्थिति की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति, वन स्वीकृतियों की वर्तमान स्थिति तथा कार्यों के समयबद्ध निष्पादन पर विस्तार से चर्चा की गई। काबीना मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी संबंधित निर्माण कार्य निधारित समय-सीमा के भीतर उच्च गुणवत्ता के साथ पूर्ण किए जाएँ ।

उन्होंने यह भी निर्देश दिये कि सड़कों के रखरखाव का कार्य संबंधित ठेकेदारों द्वारा नियमित रूप से किया जाए, ताकि आम जनता को बेहतर एवं सुरक्षित आवागमन की सुविधा मिल सके, प्रभावित लोगों को देय मुआवजे का वितरण समय पर सुनिश्चित किया जाए, जिससे जनता को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि परियोजनाओं को समय पर पूरा करने के लिए वन स्वीकृतियों की प्रक्रिया में तेजी लाना सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके लिए प्रतिपूरक वनीकरण (कम्पेन्सेटरी अफॉरेस्टेशन) हेतु भूमि की उपलब्धता समय रहते सुनिश्चित की जाए, ताकि किसी प्रकार की अनावश्यक देरी न हो।

बैठक में यह भी निर्देश दिए गए कि परियोजना कार्यान्वयन इकाइयाँ (पीआईयू) जिला प्रशासन एवं वन विभाग के अधिकारियों के साथ सतत एवं प्रभावी समन्वय बनाए रखें। साथ ही, भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया को सरल एवं शीघ्र बनाने के लिए वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्च स्तर पर नियमित बैठकें आयोजित की जाएँ। मंत्री ने अधिकारियों से अपेक्षा की कि सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की परियोजनाओं को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण करें, ताकि प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों को बेहतर सड़क संपर्क का लाभ शीघ्र उपलब्ध कराया जा सके। बैठक में ग्रामीण विकास विभाग के सचिव श्री धीराज गर्ब्याल, पीएमजीएसवाई के मुख्य अभियंता श्री संजय पाठक सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

सहकारिता में हरियाणा व उत्तराखंड मिलकर करेंगे काम : डॉ. धन सिंह रावत

देहरादून। सूबे के सहकारिता मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने अपने चण्डीगढ़ प्रवास के दौरान आज चण्डीगढ़ में हरियाणा स्टेट को-ऑपरेटिव एपेक्स बैंक लिमिटेड के मुख्यालय का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों के साथ बैठक कर बैंक की कार्यप्रणाली, डिजिटल सेवाओं तथा किसानों, महिलाओं व युवाओं के आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित योजनाओं के बारे में जानकारी ली। सूबे के सहकारिता मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने मीडिया को जारी बयान में बताया कि अपने एक दिवसीय चण्डीगढ़ भ्रमण के दौरान उन्होंने आज हरियाणा स्टेट को-ऑपरेटिव एपेक्स बैंक लिमिटेड के मुख्यालय का दौरा किया। उन्होंने बताया कि सहकारिता के क्षेत्र में हरियाणा ने बेहतर काम किया है, खासकर बैंकिंग क्षेत्र में किये जा रहे नवाचारों, पारदर्शी कार्यप्रणाली और जनहितकारी योजनाएं अन्य राज्यों के लिये भी अनुकरणीय है। डॉ. रावत ने कहा कि सहकारिता क्षेत्र में दोनों राज्यों के बीच अनुभवों और उत्कृष्ट कार्यप्रणालियों का आदान-प्रदान किया जायेगा, जिससे दोनों राज्यों में सहकारिता आंदोलन नई दिशा दी जा सकेगी।

डॉ. रावत ने इस दौरान राज्य सरकार द्वारा संचालित दीनदयाल उपाध्याय अल्पकालीन एवं मध्यकालीन ऋण वितरण योजना की जानकारी साझा करते हुये बताया कि इस योजना के तहत किसानों को ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। जिसका लाभ प्रदेश का किसान उठा रहा है। इस योजना से किसानों की आर्थिकी भी सुदृढ़ हुई है। डॉ. रावत ने बताया कि ब्याज मुक्त ऋण योजना सहकारिता आधारित कृषि क्षेत्र में प्रभावी परिणाम दे रही है। इस अवसर पर डॉ. रावत ने हरियाणा स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक के नवनियुक्त अध्यक्ष भारत भूषण जुयाल को बधाई दी। उन्होंने उम्मीद जताई कि नवनियुक्ति अध्यक्ष के नेतृत्व में स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक नई ऊंचाई हासिल करेगा। इस अवसर पर हरियाणा स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष भारत भूषण जुयाल ने सहकारिता मंत्री डॉ. धन सिंह रावत का जोर शोर से स्वागत किया। उन्होंने कहा कि डॉ. रावत के नेतृत्व में उत्तराखंड ने सहकारिता क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल की है। उन्होंने कहा कि नवाचार, पारदर्शिता और किसान हितैषी योजनाओं के जरिये सहकारिता आंदोलन को आम लोगों के बीच पहुंचाया। उन्होंने शून्य प्रतिशत ब्याज ऋण योजना, सहकारी संस्थाओं के आधुनिकीकरण तथा डिजिटल पहल की सराहना करते हुए कहा कि इन प्रयासों की चर्चा हरियाणा सहित अन्य राज्यों में भी हो रही है। इस दौरान बैंक अधिकारियों ने बैंक की उपलब्धियों, वित्तीय समावेशन, डिजिटल बैंकिंग, किसानों के लिए संचालित योजनाओं तथा सहकारी बैंकिंग को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में किए जा रहे हरियाणा सरकार के प्रयासों की पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण दिया। इस अवसर पर हरियाणा स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक के प्रबंध निदेशक डॉ. प्रफुल्ल रंजन, महाप्रबंधक उर्वशी गुप्ता, उप महाप्रबंधक सुधा शर्मा तथा प्रबंधक जसपाल पंवार सहित अन्य बैंक अधिकारी उपस्थित रहे।

तिरंगा यात्रा को लेकर बैठक आयोजित

देहरादून। आज भारतीय जनता पार्टी महानगर अध्यक्ष के नेतृत्व में महानगर की पांचो विधानसभाओं में तिरंगा यात्रा को लेकर बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता कर रहे महानगर के अध्यक्ष सिद्धार्थ उमेश अग्रवाल ने सभी विधानसभाओं में सभी कार्यकर्ताओं एवं युवा कार्यकर्ताओं से आवाहन किया कि 9 अगस्त 2026 को महानगर की यह तिरंगा यात्रा एक भव्य तिरंगा यात्रा रहने वाली है चुकी इस तिरंगा यात्रा में प्रदेश के युवा मुख्यमंत्री आदरणीय पुष्कर सिंह धामी जी के नेतृत्व में होगी महानगर का प्रत्येक युवा बड़े उत्साह के साथ इस रैली में सम्मिलित होने के लिए तैयार है यह उन सब की नैतिक जिम्मेदारी है कि तिरंगे के सम्मान में इस यात्रा में अपनी सहभागिता निभाएं जिसके तहत महानगर के द्वारा सभी विधानसभाओं में संगठन के द्वारा तिरंगे वितरण किया जा रहे हैं साथ ही उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के द्वारा 9 अगस्त से 15 अगस्त 2026 तक राष्ट्रव्यापी तिरंगा यात्रा अभियान का आयोजन किया जा रहा है महानगर देहरादून के प्रत्येक घर पर तिरंगा लहराना चाहिए। देश के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी का भी आवाहन है कि प्रत्येक भारतवासी तिरंगे की सम्मान में सम्मान यात्रा में सहभाग करें और अपने-अपने घर पर तिरंगा लहरा कर राष्ट्र को समर्पित राष्ट्रीय एकता का संदेश दें।

हम सब मिलकर अपने-अपने घर पर तिरंगा लहरा कर देश के स्वतंत्रता सेनानियों वीर सैनिकों का सम्मान करें। कार्यक्रमों में उत्तराखंड सरकार में कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी एवं धर्मपुर विधायक विनोद चमोली कैंट विधायक श्रीमती सविता कपूर ने भी सभी कार्यकर्ताओं से युवाओं से आवाहन किया कि इस 9 अगस्त की तिरंगा यात्रा में हम सभी को एकत्र होकर माननीय मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी जी के साथ राष्ट्रव्यापी तिरंगा यात्रा में सहभागी करना है कार्यक्रम में दर्जाधारी मंत्री ज्योति प्रसाद गैरोला कुलदीप बुटोला टोला यशपाल बिष्ट प्रदेश मंत्री आदित्य चौहान विनय गोयल सभी मंडलों के अध्यक्ष महामंत्री पदाधिकारी कार्यकर्ताउपस्थित रहे।

डीएम ने किया विभिन्न बूथों का स्थलीय निरीक्षण

पिथौरागढ़। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कार्यक्रम के तहत जारी होने वाले नोटिस एवं दावों तथा आपत्तियों पर हो रही सुनवाई का आज जिलाधिकारी जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष भटगांई ने पिथौरागढ़ नगर के विभिन्न बूथों का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अधिकारियों एवं मतदाताओं से वार्तालाप कर जारी नोटिसों, आपत्तियों एवं दावों के सम्बन्ध में विभिन्न जानकारियां प्राप्त की। जिलाधिकारी ने आपत्तियों को सुनने वाले सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों को निर्देशित किया कि भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों के अनुसार कोई भी पात्र मतदाता न छूटे तथा कोई भी अपात्र मतदाता को मतदाता न बनाया जाए। मतदाता सूची को स्पष्ट एवं पारदर्शी बनाना एसआईआर का उद्देश्य है। सभी अधिकारी अपना अपना दायित्व का बखूबी निर्वहन करें। उन्होंने यह भी कहा कि अनावश्यक रूप से किसी भी व्यक्ति को परेशान न किया जाए।

जब कुमार गौरव की डेब्यू फिल्म ''लव स्टोरी'' हुई ब्लॉकबस्टर

कुमार गौरव की डेब्यू फिल्म ''लव स्टोरी'' ब्लॉकबस्टर हो चुकी थी। लेकिन बहुत हैरान करने वाली बात उस फिल्म के साथ ये थी कि उसमें डायरेक्टर के तौर पर राहुल रवैल का नाम नहीं था। उस फिल्म में किसी डायरेक्टर का नाम नहीं दिया था। और ये हुआ था राजेंद्र कुमार व राहुल रवैल के बीच हुए विवाद के चलते। ये एक अलग कहानी है।

एक बार बहुत पहले मैं किस्सा टीवी पर इस कहानी का जिक्र कर चुका हूं। किसी दिन फिर से करूंगा। आज बेताब फिल्म के बनने की कहानी जानेंगे। साल 1983 में की 05 अगस्त को सनी देओल व अमृता सिंह की डेब्यू फिल्म बेताब रिलीज हुई थी।

आज बेताब के 43 साल पूरे हुए हैं। बेताब की ये कहानी वैसे पिछले साल भी पोस्ट की थी हमने। मगर पिछली बार बहुत अधिक लोगों तक ये पहुंची ही नहीं। इस दफा शायद पहुंचे।

लव स्टोरी के बाद राहुल रवैल को कोई नया काम नहीं मिल रहा था। इस कारण राहुल रवैल परेशान रहने लगे थे। राज कपूर को समर्पित अपनी किताब में राहुल रवैल लिखते हैं कि उस वक्त वो डिप्रैस्ड भी रहने लगे थे। इस लेख में जो जानकारियां आप पढ़ेंगे उनमें से बहुत सी राहुल रवैल द्वारा लिखित किताब ष्राज कपूरः द मास्टर एट वर्कष् से ही ली गई हैं।

कहानी आगे बढ़ाते हैं। एक दिन धर्मेंद्र के भाई अजीत देओल राहुल रवैल से मिलने आए। अजीत जी ने राहुल रवैल को बताया कि धरम जी अपने बड़े बेटे सनी को लॉन्च करने की प्लानिंग कर रहे हैं। इसलिए कल तुम उनसे मिलने उनके घर पहुंच जाना।

अगले दिन राहुल रवैल धरम जी से मिलने उनके घर पहुंच गए। शुरुआती हाय-हैलो के बाद शुरू हुई बातचीत में धरम जी ने राहुल रवैल को बताया कि वो सनी को लॉन्च करना चाहते हैं। और उन्होंने लव स्टोरी फिल्म भी देखी है। उन्हें लव स्टोरी बहुत पसंद आई है। धरम जी ने राहुल रवैल से पूछा कि क्या तुम सनी की डेब्यू फिल्म डायरेक्ट करना चाहोगे? चूंकि राहुल रवैल को तो उस वक्त काम की जरूरत थी ही, इसलिए उन्होंने फौरन धरम जी से कहा कि जरूर। मैं ये फिल्म डायरेक्ट करना चाहूंगा। इस तरह धरम जी और राहुल रवैल के बीच सनी की डेब्यू फिल्म बेताब के डायरेक्शन की डील हो गई। हालांकि ये कोई कागजों पर हुई डील नहीं थी।

राहुल रवैल के मन में डर था कि कहीं धरम जी अपना इरादा ना बदल लें। वो फौरन धरम जी के घर से निकले। और पहुंचे राज कपूर के पास। राहुल रवैल राज कपूर को अपना गुरू मानते हैं। राहुल रवैल ने वो खबर सबसे पहले राज कपूर को ही बताई।

प्रतिक्रिया देते हुए राज कपूर राहुल रवैल से बोले,ष्मैं तो तुमसे पहले ही कहा था कि टैलेंट कभी बर्बाद नहीं जाता है। लव स्टोरी में तुम्हारा नाम नहीं दिया गया। तुम इतना परेशान थे। लेकिन अब देखो। तुम्हें कितना बड़ा मौका मिला है।ष्

अपनी किताब में राहुल रवैल लिखते हैं कि उनके लिए ये बहुत गर्व की बात थी कि धर्मेंद्र जैसा फिल्म इंडस्ट्री का बड़ा आदमी उन्हें इस काबिल समझ रहा है कि वो अपने बेटे की लॉन्चिंग फिल्म डायरेक्ट कराना चाहता है।

राहुल रवैल ने ये भी उस किताब में बताया है कि बॉबी के सेट पर जब वो राज कपूर के असिस्टेंट डायरेक्टर की हैसियत से काम कर रहे थे तो उस वक्त राज कपूर ने उनसे एक बात कही थी।

राज कपूर ने कहा था कि अगर कोई प्रेम कहानी वाली फिल्म बनानी हो तो उसके लिए नए कलाकार सबसे उपयुक्त रहते हैं। क्योंकि दर्शकों के बीच उनकी कोई छवि नहीं होती।

नए कलाकार पर्दे पर जो भी करते दिखते हैं वो रिलेटेबल और बिलिवेबल लगता है। बेताब में राहुल रवैल को नए कलाकार ही मिल रहे थे। इसलिए उन्होंने तय किया कि वो एक लव स्टोरी ही बनाएंगे।अब चुनौती थी कोई नई और अच्छी प्रेम कहानी तलाशने की। राहुल रवैल को याद आया कि जब वो स्कूल में पढ़ते थे तो उन्होंने लिटरेचर में विलियम शेक्सपीयर की एक कहानी पढ़ी थी जिसका नाम था ष्द टेमिंग ऑफ दश्थ्यूष्

राहुल रवैल ने सोचा कि ये कहानी अगर आज के दौर के अनुसार प्रजेंट की जाए तो अच्छी फिल्म बन सकती है। अगले दिन राहुल रवैल धरम जी से मिलने उनके घर पहुंचे। धरम जी ने राहुल से कहानी के बारे में पूछा। राहुल रवैल ने उन्हें वही कहानी सुना दी।

हालांकि राहुल रवैल ने धर्मेंद्र जी को ये नहीं बताया कि ये कहानी उन्होंने ली कहां से है। धरम जी को कहानी पसंद आई। उन्हें लगा कि राहुल रवैल महबूब खान की आन(जिसमें दिलीप कुमार थे।) फिल्म को नए रंग-ढंग में रीमेक करना चाहते हैं। यहां ये बात भी जानने लायक है की शेक्सपीयर की इस कहानी पर अब तक कई भाषाओं में 28 दफा फिल्में बन चुकी हैं। फिल्म बनाने वालों ने बस मामूली बदलाव किए हैं इस कहानी में। सात से आठ बार तो ये कहानी भारत में ही बन चुकी है।

धर्मेंद्र जी ने इस कहानी पर फिल्म लिखने के लिए लेखक जावेद अख्तर को बुलाया। इस समय तक सलीम-जावेद की जोड़ी टूट चुकी थी। धरम जी के कहने पर जावेद अख्तर फिल्म लिखने के लिए तैयार हो गए।

इस तरह ये सलीम-जावेद की जोड़ी टूटने के बाद जावेद अख्तर द्वारा अकेले लिखी गई ये पहली फिल्म थी। जावेद साहब ने अपना काम बखूबी अंजाम भी दिया। उन्होंने उस पुरानी कहानी को एक बढ़िया नया लुक दे दिया।

अपनी किताब में राहुल रवैल ने लिखा है कि जब वो लव स्टोरी फिल्म की शूटिंग कश्मीर में कर रहे थे तब उन्होंने वहां एक बडीष् ही खूबसूरत लोकेशन देखी थी। धरम जी के बेटे सनी की डेब्यू फिल्म के लिए राहुल रवैल को वही लोकेशन सही लगी।

राहुल रवैल के मुताबिक, उन्हें ख्याल आया था कि फिल्म में उस लोकेशन पर सनी देओल का घर दिखाया जाएगा तो फिल्म विजुअली बहुत रिच लगेगी। एक दिन राहुल रवैल सिनेमैटोग्राफर मनमोहन सिंह व कुछ अन्य लोगों को साथ लेकर लोकेशन देखने कश्मीर की उसी जगह पहुंच गए। सभी को वो लोकेशन बहुत बढ़िया लगी। बेताब की ज्यादातर शूटिंग कश्मीर में ही हुई थी। हालांकि फिल्म में जो शम्मी कपूर साहब का ऐस्टेट दिखाया गया है वो बैंगलोर की एक लोकेशन थी। राहुल रवैल के मुताबिक, जब उन्होंने बेताब फिल्म कंप्लीट कर ली तो सबसे पहले उस फिल्म को उन्होंने राज कपूर जी को ही दिखाया। राज कपूर ने उन्हें कुछ बदलाव करने की सलाह दी थी, जो राहुल रवैल ने किए भी। जब पांच अगस्त 1983 को बेताब रिलीज हुई थी, उससे एक दिन पहले राहुल रवैल राज कपूर से मिलने उनके ऑफिस गए थे। राहुल रवैल नर्वस थे। राज कपूर के ऑफिस में तब डिस्ट्रीब्यूटर वकील सिंह भी बैठे थे। और वकील सिंह तब तक बॉम्बे व पंजाब टैरेटरी के बेताब फिल्म के राइट्स खरीद चुके थे। बातचीत के दौरान राज कपूर ने राहुल रवैल से मजाक में कहा कि वकील सिंह जी ने सुना था कि तुमने लव स्टोरी के एक शॉट के तीस टेक लिए हैं। तब इन्होंने लव स्टोरी के पंजाब टैरेटरी के राइट्स खरीद लिए।

अजय देवगन के लिए मील का पत्थर साबित हुई थी 'विजय पथ'

नई दिल्ली। विजयपथ ने उस तूफान में भी बॉक्स ऑफिस पर बहुत शानदार प्रदर्शन किया था जो हम आपके हैं कौन फिल्म ने उस साल मचाया था। और उसी दिन से मचाया था जिस दिन विजयपथ रिलीज हुई थी। मतलब ये कि विजयपथ और हम आपके हैं कौन, दोनों ही फिल्में आज से 32 साल पहले रिलीज हुई थी। यानि 5 अगस्त 1994 को। बजट था इस फिल्म का लगभग 2.75 करोड़ रुपए। और नेट कलैक्शन रहा था इसका 6.45 करोड़। यानि फिल्म हिट रही थी। शानदार प्रदर्शन किया था इस फिल्म ने भी बॉक्स ऑफिस पर। फारूक सिद्दीक डायरेक्टर थे इस फिल्म के। धीरजलाल शाह प्रोड्यूसर थे। संगीत अनु मलिक ने दिया था। इंटरनेट पर ऐसी बातें कही जाती हैं इस फिल्म के बारे में कि दिव्या भारती की मृत्यु के बाद रवीना टंडन को विजयपथ में कास्ट किया गया था। लेकिन करिश्मा कपूर ने उन्हें फिल्म से निकलवा दिया था। क्योंकि उस जमाने में करिश्मा अजय देवगन की गर्लफ्रेंड थी। ये सच है कि नहीं, मुझे नहीं पता। लेकिन आईएमडीबी पर यही लिखा है। रवीना टंडन के फिल्म से आउट होने के बाद तब्बू को ये फिल्म मिली। फिल्म में कुल सात गीत थे जिनमें से चार लिखे थे इंदीवर जी ने। जबकी एक-एक गीत लिखा था श्याम अनुरागी, जमीर काजमी और फैज अनवर ने। फिल्म के गाने भी बहुत हिट हुए थे। कहा जाता है कि रुक रुक रुक गीत के लिए पहले गायिका पूर्णिमा को बुलाया गया था। लेकिन रिकॉर्डिंग के दिन वो समय पर नहीं आई। जिस वजह से संगीतकार अनु मलिक उनसे बहुत नाराज हुए। अनु मलिक और पूर्णिमा के बीच काफी बहसबाजी हो गई। जिससे पूर्णिमा नाराज हो गई और स्टूडियो छोड़कर चली गई। तब अनु मलिक ने अलीशा चिनॉय को ये गाना रिकॉर्ड कराने के लिए बुला लिया। अलीशा चिनॉय ने आकर गाना रिकॉर्ड कर दिया। ये बात जब पूर्णिमा को पता चली कि वो गाना अलीशा चिनॉय से रिकॉर्ड करा लिया गया है तो पूर्णिमा बहुत नाराज हुई। उन्होंने मीडिया में अलीशा चिनॉय और अनु मलिक को बहुत क्रिटिसाइज किया। जवाब में अलीशा चिनॉय ने भी उन्हें काफी कुछ कहा। इस घटना का जिक्र आईएमडीबी के आर्टिकल में एक जगह किया गया है।

विजयपथ के प्रमुख कलाकारों की बात करें तो अजय देवगन और तब्बू के अलावा डैनी, गुलशन ग्रोवर, सुरेश ओबेरॉय, रीमा लागू, विकास आनंद, राम मोहन, अपराजिता भूषण, अनंत जोग, ब्रिजेश त्रिपाठी और गुरबच्चन सिंह ने भी फिल्म में अहम किरदार निभाए थे। एक्ट्रेस सिल्क स्मिता ने इस फिल्म में एक आयटम नंबर किया था। विजयपथ की हीरोइन तब्बू को उनकी एक्टिंग के लिए फिल्मफेयर ने बेस्ट फीमेल डेब्यू अवॉर्ड दिया था।

जबकी डैनी साहब बेस्ट विलेन कैटेगरी में नॉमिनेट हुए थे। रुक रुक सॉन्ग के लिए अलीशा चिनॉय जी बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर अवॉर्ड के लिए नॉमिनेट हुई थी। इसी अवॉर्ड के लिए अल्का याज्ञिक जी भी नॉमिनेट हुई थी। लेकिन उनका गाना था राह में उनसे मुलाकात हो गई। हालांकि ये अवॉर्ड उस साल कविता कृष्णमूर्ति जी को ''1942: ए लव स्टोरी'' फिल्म के गीत ''प्यार हुआ चुपके से'' के लिए दिया गया था।

मुख्यमंत्री की मॉनिटरिंग में राहत एवं पुनर्निर्माण कार्य तेज, मालदेवता में आवागमन सुरक्षित

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के सतत मार्गदर्शन एवं जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान के निर्देशन में मालदेवता, सौड़ा सरौली तथा आसपास के आपदा

प्रभावित क्षेत्रों में राहत, पुनर्निर्माण एवं सुरक्षा कार्य युद्धस्तर पर संचालित किए जा रहे हैं। जिला प्रशासन द्वारा क्षतिग्रस्त सड़कों के पुनर्निर्माण, सुरक्षा दीवारों के निर्माण तथा नदी तटों के संरक्षण संबंधी कार्यों में तेजी लाते हुए प्रभावित क्षेत्रों में आवागमन को सुरक्षित एवं सुचारु बनाया जा रहा है। भारी वर्षा के कारण रायपुर विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत अनेक सड़क मार्ग एवं सुरक्षा संरचनाएं क्षतिग्रस्त हो गई थीं। स्थिति का स्वयं स्थलीय निरीक्षण करने के उपरांत जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान ने संबंधित विभागों को तत्काल प्रभाव से पुनर्स्थापन एवं सुरक्षा कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए थे। प्रशासन की त्वरित कार्रवाई के परिणामस्वरूप अधिकांश आवश्यक कार्य निर्धारित समय में पूर्ण कर लिए गए हैं।

जिला प्रशासन द्वारा संवेदनशील स्थलों पर निर्मित सुरक्षा उपायों की निरंतर निगरानी की जा रही है। सुरक्षा दीवारों पर लगाए गए जाल तथा अन्य सुरक्षात्मक व्यवस्थाओं का नियमित निरीक्षण किया जा रहा है, ताकि लगातार हो रही वर्षा के दौरान किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना की संभावना को न्यूनतम किया जा सके तथा स्थानीय नागरिकों की आवाजाही निर्बाध बनी रहे। लगातार वर्षा के कारण सोंग नदी के बढ़े जलस्तर से मालदेवता स्थित कलिंगा नहर भी क्षतिग्रस्त हो गई थी। सिंचाई विभाग ने त्वरित कार्रवाई करते हुए नहर का पुनर्निर्माण पूर्ण कर लिया है, जिससे किसानों को पुनः सिंचाई हेतु पर्याप्त जल उपलब्ध होने लगा है। इसके अतिरिक्त प्रशासन द्वारा पोकलैंड एवं जेसीबी मशीनों के माध्यम से नदी का चौनलाइजेशन कार्य भी युद्धस्तर पर कराया जा रहा है। नदी के बहाव को नियंत्रित करने तथा संभावित क्षति को कम करने के उद्देश्य से संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा आपदा प्रभावित क्षेत्रों में राहत, बचाव एवं पुनर्निर्माण कार्यों की निरंतर मॉनिटरिंग की जा रही है। जिला प्रशासन भी विभिन्न विभागों के साथ प्रभावी समन्वय स्थापित करते हुए राहत एवं पुनर्वास कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता के आध ार पर धरातल पर संचालित कर रहा है। अपर जिलाधिकारी श्री के.के. मिश्रा ने बताया कि अतिवृष्टि से क्षतिग्रस्त सड़क मार्गों एवं सुरक्षा दीवारों के पुनर्निर्माण का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। उन्होंने कहा कि जिलाधि कारी के निर्देशन में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) द्वारा क्षतिग्रस्त सड़क मार्गों एवं सुरक्षा दीवारों का निर्माण कराया गया है, जबकि मालदेवता क्षेत्र में लोक निर्माण विभाग द्वारा क्षतिग्रस्त स्थलों के पुनर्स्थापन का कार्य पूरा कर लिया गया है। इसके साथ ही सिंचाई विभाग द्वारा कलिंगा नहर का पुनर्निर्माण भी पूर्ण कर लिया गया है, जिससे क्षेत्र के किसानों को सिंचाई जल की समस्या से राहत मिल गई है। जिलाधिकारी ने मानसून अवधि के दौरान सभी संवेदनशील क्षेत्रों की सतत निगरानी जारी रखने तथा जनसुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए आवश्यकता पड़ने पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है।

एनआईटी श्रीनगर के विकास और उच्च शिक्षा के विभिन्न मुद्दों पर की चर्चा

देहरादून,। सूबे के विद्यालयी शिक्षा,

तकनीकी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने आज नई दिल्ली में केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रहलाद जोशी से शिष्टाचार भेंट की। मुलाकात के दौरान डॉ. रावत ने एचएनबी गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय में 459.095 करोड़ की लागत से शैक्षणिक एवं अनुसंधान अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण सहित उच्च शिक्षा से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की। मीडिया को जारी बयान में डॉ. रावत ने बताया कि नवनियुक्त केन्द्रीय शिक्षा मंत्री प्रहलाद जोशी से हुई शिष्टाचार बैठक में कई महत्वपूर्ण विषयों पर सार्थक चर्चा हुई। इस दौरान केन्द्रीय मंत्री के साथ हेफा (उच्च शिक्षा वित्तपोषण एजेंसी) के तहत एचएनबी गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय में 459.095 करोड़ की लागत से शैक्षणिक एवं अनुसंध ान अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। यह परियोजना उत्कृष्ट शैक्षणिक गतिविधि यां, अनुसंधान व नवाचार को नई गति प्रदान करेगी साथ ही विश्वविद्यालय में आधुनिक सुविध ाओं के विकास में अहम साबित होगी, जिसका लाभ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं व शिक्षकों के साथ ही आम जनमानस को मिलेगा। इस अवसर पर डॉ. रावत ने एनआईटी श्रीनगर (गढ़वाल) के नवनिर्मित परिसर के लोकार्पण हेतु आमंत्रित करते हुये समय उपलब्ध कराने का अनुरोध किया ताकि परिसर में छात्र-छात्राओं, शोध ार्थियों एवं शिक्षकों को शैक्षणिक व प्रशासनिक गतिविधियों शीघ्र लाभ मिल सके। इसके अलावा डॉ. रावत ने संस्थान के सुचारू संचालन को केन्द्रीय मंत्री से स्थाई निदेशक की शीघ्र नियुक्ति की मांग की, साथ ही उन्होंने एनआईटी परिसर में हो रहे जलभराव से केन्द्रीय मंत्री को अवगत कराया और 6 परिवारों के समुचित विस्थापन व पुनर्वास के लिये आवश्यक सहयोग करने का अग्रह किया। जिस पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने सभी प्रस्तावों पर सकारात्मक सहयोग का आश्वासन दिया। मुलाकात के दौरान केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने शिक्षा के क्षेत्र में राज्य की उल्लेखनीय उपलब्धियों पर डॉ. धन सिंह रावत को बधाई दी।

निर्वाचन प्रक्रिया को पारदर्शी एवं समयबद्ध बनाने पर जोर, सुनवाई एवं नोटिस वितरण की समीक्षा

गोपेश्वर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार निर्वाचन संबंधी प्रक्रियाओं को अधिक पारदर्शी, प्रभावी एवं समयबद्ध बनाने के उद्देश्य से उप मुख्य निर्वाचन

अधिकारी किशन सिंह नेगी ने तहसील कर्णप्रयाग में निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधि कारियों एवं सहायक निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों के साथ बैठक कर निर्वाचन प्रकरणों की सुनवाई एवं नोटिस वितरण व्यवस्था की विस्तृत समीक्षा की।

बैठक में उप मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दावे एवं आपत्तियों से संबंधित सभी प्रकरणों का निस्तारण निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप निर्धारित समयसीमा में किया जाए।

उन्होंने कहा कि नोटिसों का वितरण समयबद्ध एवं विधिसम्मत तरीके से सुनिश्चित किया जाए तथा सुनवाई की प्रक्रिया को पूरी पारदर्शिता के साथ संचालित किया जाए, ताकि प्रत्येक पात्र नागरिक को निष्पक्ष सुनवाई का अवसर मिल सके।

उन्होंने अधिकारियों से निर्वाचन संबंधी प्रक्रियाओं में आने वाली व्यावहारिक समस्याओं की जानकारी लेते हुए उनके त्वरित समाधान के लिए आवश्यक सुझाव भी प्राप्त किए।

साथ ही निर्देश दिए कि निर्वाचन कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए तथा सभी अधिकारी आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए आयोग के निर्देशों का अक्षरशः पालन सुनिश्चित करें।

बैठक में उप जिलाधिकारी कर्णप्रयाग अलकेश नौडियाल, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी धीरेंद्र चंद्र सती, प्रवीन भट्ट, दीपेन्द्र पवार सहित अन्य संबंधित अधिकारी एवं कार्मिक उपस्थित रहे।

स्वामी एवं प्रकाशक मौ. वसी के लिये मुद्रक नुसरत निशान खान द्वारा कौमी गुलदस्ता प्रिंटर्स, विलेज आमवाला, पोस्ट घंघौरा, देहरादून द्वारा, उत्तराखण्ड-248141 से मुद्रित एवं 5, लेन नम्बर 2, नामदेव एन्क्लेव फेस 2, ब्राहम्णवाला, देहरादून उत्तराखण्ड- 248171 से प्रकाशित। सम्पादक-मौ. वसी,
समस्त विवाद के लिये न्याय क्षेत्र देहरादून मान्य होगा। सम्पर्क- 9411112331
हमारे अखबार के ताजा अंक को ऑनलाइन पढ़ने के लिये www.aawamindia.com वेबसाइट पर जायें।
facebook: www.facebook.com/indiaaawam, youtube:www.youtube.com/@aawamindia,
X:www.x.com/aawamindia, Instagram:https://instagram.com/aawamindia